एंजिल भाग गई

शरोवन

***

उसके मन में बनाये हुये वे ख्वाब कि जिनके इरादों की हरेक तस्वीर में उसने कितनी हसरतों के साथ अपने मित्र बिन्यामीन के उजड़े और बरबाद घर की नई नींवे रखी थीं, कौन जानता था कि यहां आने से पूर्व ही वे न जाने कब की काल के गर्त में समा चुकी हैं। एंजिल ने जो कुछ अपने बारे में किया था, वह नहीं समझ सका था कि वह उसके परिवार की कोई परम्परा थी या फिर आदत?

***

इण्टर कक्षा को पढ़ाते हुये जैसे ही पीरियड समाप्ति का घंटा बजा तो चाॅक के पाऊडर में सने हुये सफेद हाथों को साफ करते हुये नवरोष कक्षा से निकलकर सीधा काॅमन रूम में पहुंचा। जाकर उसने नल के पानी से हाथ धोये और उन्हें जेब से रूमाल निकालकर पोंछता हुआ कैफीटेरिया की ओर चल दिया । इस कक्षा को पढ़ाने के पष्चात उसके लगातार दो पीरियड खाली रहा करते थे, सो इन्हीं दोनों पीरियडों का उपयाोग वह अपने लंच के लिये कर लिया करता था। हांलाकि उसे

भूख तो नहीं थी, फिर भी यह सोचकर कि जाकर एक प्याला चाय ही पी लेगा और इसी बहाने वह खुद को हल्का भी कर लेगा। मन और शरीर दोनों ही से वह काफी कुछ तरोताज़ा तो हो ही सकता है। ऐसा सोचते हुये वह कैफीटेरिया के दरवाजे से जैसे ही भीतर घुसा तो सामने ही एक कोने की मेज पर मुंह लटकाये, विचारों में गुम और उदास बैठे अपने संगी साथी मित्र अध्यापक बिन्यामीन को अचानक से देखकर चौंका तो मगर, उसकी दशा को देखकर उसे कोई विशेष आश्चर्य नहीं हुआ। इसका कारण था कि जिन हालातों और परिस्थियों की कैद से निकलकर बिन्यामीन उसे एक अरसे के पश्चात् आज कालेज में दिखाई दिया था, उसके कारण उसके चेहरे की रंगत ऐसी गंभीर और उदास दिखना कोई नई बात नहीं थी। नवरोश जानता था कि पिछले दो वर्ष पूर्व ही तो बिन्यामीन ने अपना विवाह बड़े ही धूमधाम से किया था। वह खुद भी तो उसके विवाह में शामिल हुआ था। मीता उसके जीवन में उसकी सुन्दर पत्नी ही नहीं बल्कि इसी कालेज की एक शालीन, सभ्य तथा समझदार अध्यापिका बनकर अपनी छाप बना चुकी थी। कालेज के हरेक छात्र से लेकर कर्मचारी और अध्यापिकों तक में उसके मिलनसार व्यक्तित्व के चर्चे होने लगे थे। मगर कौन जानता था कि बिन्यामीन के लिये उसके जीवन में बांटे गये खुशी और चहलपहल के ये दिन भी जैसे घाटे में दिये गये थे। डेढ़ माह पहले ही मीता अपने नवजात शिशु को जन्म देने के समय पर अपने बच्चे के साथ ही चल बसी थी। खुद तो गई ही थी, लेकिन साथ में बिन्यामीन के हंसते.खेलते और लहलहाते पारिवारिक चमन में दुख और क्षोभ के भार से लदे हुये बे-मौसमी पतझड़ के पत्तों के ढेर भी छोड़ भी गई थी। वे सूखे पत्तों के खड़खड़ाते ढेर कि जिनमें अब बिन्यामीन के तमाम दुखों के साथ साथ उसकी उदास कामनाओं की दुखभरी यादों के सिवा अैर कुछ भी बाकी नहीं बचा था।

बिन्यामीन नवरोश की उपस्थिति से अभी तक अनजान अपनी ही मुद्रा में पूर्वरत् बैठा हुआ था। इस बीच नवरोष ने काऊंटर पर जाकर पहले दो प्याले चाय बनवाई, फिर उन्हें लेकर वह बिन्यामीन की ही मेज के सामने जब चाय के प्यालों को रखने लगा तो बिन्यामीन नवरोश को अचानक ही देखकर चौकं गया। चाय के प्यालों और नवरोश को एक प्रश्नसूचक दृष्टि से ताकता हुआ वह हल्का सा कृतिम मुस्कान को बिखेरता हुआ बोला,

‘तुम कक्षा में पढ़ा रहे होगे, यही सोचकर मैं यहां आकर बैठ गया था।’

‘वह तो ठीक है। लेकिन घर से लौटकर तुम आ चुके हो? यह बात तो कम से कम बता ही सकते थे? एक मिनट के लिये फोन करने में कौन सी बड़ी हानि हो जानी थी।’ नवरोश ने चाय का प्याला बिन्यामीन की तरफ बढ़ाते हुये अपनी मित्रता की हल्की सी शिकायत सी की तो बिन्यामीन जैसे बहुत ही निराश भावना से बोला कि,

‘कैसे करता फोन? आजकल कुछ भी करने का मन ही नहीं होता है। सारा सूना, अस्तव्यस्त सा घर भांय भांय करता प्रतीत होता है। दरवाजे की तरफ देखता हूं तो रोना आता है। किचिन में घुसता हूं तो खुद को एक अपराधबोध की भावना से ग्रस्त कर लेता हूं। सोचता हूं कि यदि मीता मुझसे शादी नहीं करती तो शायद मरती भी नहीं? चार दिन की रोशनी लेकर क्या आई कि सारा जीवन ही अंधकारमय हो गया है। कहते हुये बिन्यामीन की आंखें भर आईं तो नवरोश ने उसके दोनों कन्धों पर अपने हाथ रखते हुये उसे समझाने की कोशिश की। वह उससे बोला कि,

‘मैं तुम्हारा दुख अपने दिल की गहराइयों से महसूस ही नहीं करता हूं बल्कि खुद उसे अपना ही समझता हूं। लेकिन तुम जानते हो कि इस संसार के चलन को हम और तुम बदल नहीं सकते हैं। जो यहां आया है, वह एक दिन वापस भी जायेगा। फिर मरनेवाले के साथ कोई खुद को मार तो नहीं लेगा। और ना ही खुद को यूँ इस तरह से हर रोज़ जलाते हुये उसे वापस ही बुला लेगा। अपने आपको मजबूत बनाओ। संघर्ष करना सीखो। जीने के लिये सारा जीवन पहाड़ सा पड़ा है। यूँ इस तरह से अपने आपको तोड़ते रहोगे तो ना तो कायदे से जी सकोगे और ना ही चैन से कभी मर ही सकोगे। शुक्र करो कि मरनेवाली तुम्हारे ऊपर अपना कोई भी अतिरिक्त बोझ और जुम्मेदारी नहीं छोड़कर गई है। बल्कि तुम्हें अवसर भी दे गई है, अपना जीवन एक बार फिर नये सिरे से आरंभ करने का। तुम यदि हां करो तो मेरी नज़र में एक बहुत ही प्यारी, शालीन और समझदार लड़की है। मेरे ही घर के पड़ाैस की रहनेवाली है। एंजिल मैरी नाम है उसका। मुझे यकीन है कि वह तुम्हारा यह उजड़ा हुआ, बिखरा घर संभाल लेगी। मैं उसको और उसके परिवार को खूब अच्छे ढंग से जानता हूं।’

बातों का सिलसिला आरंभ हुआ तो कब समय समाप्त हो गया और प्यालों में रखी हुई चाय भी कितनी देर पहले समाप्त हो गई थी, दोनों मित्रों को पता तब चला, जबकि कालेज का घंटा फिर एक बार घनघना उठा था। सो घंटे के बजते ही नवरोश बिन्यामीन की कक्षा के पास तक आया और उसको उसकी कक्षा में छोड़ते हुये, संध्या को उसके घर फिर से आकर मिलने का वचन देकर अपनी कक्षा में पढ़ाने के लिये चला गया ।

नवरोश नथैनियेल और बिन्यामीन फिलिप इन दोनों का साथ तब हुआ था जब कि दोनों ही को जिल्पानगर के इस मिशन कालेज में ईसाई प्रत्याशी होने के नाते एक ही दिन, एक साथ ही अध्यापक की नौकरी मिली थी। इस प्रकार कि जल्दी ही दोनों एक ही मकान में एक साथ रहने लगे थे। इस प्रकार से दोनों पांच वर्षों तक एक ही मकान में रहते आय्ो थे।हांलाकि दोनों ही दो अलग अलग शहरों के साथ साथ दो विभिन्न दिशाओं, क्रमश गुड़गांव और नैनी के रहनेवाले थे। चूंकि दोनों ही अविवाहित और युवा थे, इसकारण बहुत शीघ्र ही मित्र भी बन गये थे। इस प्रकार कि जल्दी ही दोनों एक ही मकान में एक साथ रहने लगे थे। इस प्रकार से दोनों पांच वर्षों तक

एक ही मकान में रहते आये। पिछले वर्ष ही जब बिन्यामीन ने अपना विवाह किया था तो नवरोश खुद ही उसका साथ छोड़कर अलग एक किराये का कमरा लेकर रहने लगा था। मगर मीता के आने के कारण भी नवरोश और बिन्यामीन की आपस की दोस्ती, अपनत्व और स्नेह में कोई भी अन्तर नहीं आ सका था। दोनों की मित्रभावना, साथ और मिलनसारिता अपनी जगहों पर बरकरार थी। यह और बात थी कि मीता के बिन्यामीन के जीवन में आने के पश्चात दोनों मित्रों के बीच अब समय की पाबंदी ने अपनी एक सीमारेखा अवश्य ही खींच दी थी। और यह बहुत स्वाभाविक ही था कि विवाह के पश्चात बिन्यामीन को अपना समय अपनी पत्नी मीता को भी देना आवशयक था।

फिर जब शाम को सूरज ढलने लगा और दिन भर की गर्मी पास आनेवाली रात की ठंडक के एहसास मात्र से ही कम होने लगी तो नवरोश ने अपना स्कूटर चालू किया और सीधा बिन्यामीन के घर की तरफ जानेवाली सड़क पर मोड़ दिया। उसके कमरे से बिन्यामीन के घर तक के मार्ग का समय स्कूटर से लगभग बीस मिनट का रहा होगा। मार्ग में ही उसने सोच लिया.था कि बिन्यामीन के घर पहुंचकर वह केवल वहां चाय का एक प्याला ही पियेगा और शाम का खाना उसके साथ ही किसी रेस्तंरा में खा लेगा। यदि देर हो जायेगी तो रात भी वह उसी के यहां व्यतीत कर लेगा। मीता जीवित थी तब तो फिर भी उसको चाहे कितनी भी देर क्यों न हो जाती थी, वापस आना ही पड़ता था। मगर मीता की मृत्यु के पश्चात लगता था कि जैसे फिर एक बार दोनों के अतीत के जिये हुये दिनों ने करवट ली थी। दूसरे दिन दोनों मित्रों को फिर से कालेज अपने काम पर जाना था, सो वह वहीं से सीधा अपने काम पर भी चला जायेगा। ऐसा सोचते हुये नवरोश कितना षीघ्र ही बिन्यामीन के घर पर पहुंच गया था, उसे समय का कुछ पता ही नहीं चल सका था। जब वह बिन्यामीन के घर पर पहुंचा था तो वह अपने बिस्तर पर लेटा हुआ कमरे की छत को केवल ताक ही रहा था। नवरोश को देखते ही बिन्यामीन उससे बोला,

‘आओ बैठो। मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था। तुम्हें देखकर काफी तसल्ली मिलती है।’

‘बैठूंगा जरूर ही। पहले चाय का पानी तो रख दूं। तुम तो यार जानते हो कि मुझे केवल एक ही शौक है और वह भी चाय् का। सच मानो तो चाय का प्याला ही मेरे अकेलेपन का साथ है।' कहता हुआ नवरोश किचिन की तरफ जाने लगा तो बिन्यामीन ने उससे कहा कि,

‘मैंने पहले ही से तुम्हारे लिये चाय थरमस में बनाकर रख ली थी। किचिन से केवल थरमस और दो प्याले ही उठाकर ले आना।’

‘अरे वाह ! ये तो तुमने बहुत ही अच्छा काम किया है।’ कहता हुआ नवरोश तुरन्त किचिन में चला गया। फिर वहां से थरमस और साथ में दो प्याले लेकर षीघ्र ही वापस आ गया । कमरे में आकर उसने दोनों प्यालों में चाय उंडेली और एक प्याला बिन्यामीन की तरफ उसके बिस्तर के पास रखी हुई छोटी सी मेज पर रखते हुये उसने अपनी बात आरंभ की। वह बोला कि,

‘हां तो फिर क्या सोचा है तुमने एंजिल के लिये ?’

‘अरे पहले मीता की कब्र की गीली मिट्टी तो कम से कम सूख जाने दो। मुझे सामान्य हो लेने दो। फिर लोग क्या कहेंगे? जानेवाली की कब्र पर से एक बरसात भी निकल नहीं पाई और मैं दूसरी ले आया। मुझे थोड़ा सोचने का अवसर तो दो।’ बिन्यामीन ने अपनी परेशानी बताई तो नवरोश उससे बोला कि,

‘मेरा कहने का मतलब यह नहीं है कि तुम अभी ही शादी कर डालो। तुम हां बोलोगे तो मैं बात आगे चलाऊंगा। फिर यह सब करते करते कोई थोड़ा समय तो लगेगा नहीं। एक वर्ष भी लग सकता है। मेरी कोशिश है कि मीता के कारण जो कमी तुम्हारी जिन्दगी में बस गई है, उसको तुम्हारी होनेवाली दूसरी पत्नी अपने प्यार से भर देगी तो कम से कम तुम्हारा नीरस जीवन फिर से जीने का एहसास करने लगेगा।’

नवरोश की बात पर बिन्यामीन ख़ामोश हो गया तो नवरोश ने फिर से बात आगे बढ़ाई। वह बोला कि,

‘मैं अगले रविवार को गुडगांव जा रहा हूं। तीन दिन की अतिरिक्त छुट्टी भी मैंने ली है। वैसे जाने का कारण तो तुम्हें मालुम ही है। मामा मेरी काफी बीमार रहने लगी हैं। सोचता हूं कि जाकर देख आऊं। उनके गले में तकलीफ रहती है। खाना खाने में भी परेशानी होने लगी है। इलाज तो चल ही रहा है। तुम्हें तो यूँ भी उनके बारे में सारा कुछ मालुम ही है। उनसे मिलने जाऊंगा तो इसी मध्य एंजिल के मां बाप से बात भी कर लूंगा। वैसे कभी उसके पापा ने ही मुझसे कहा भी था कि मेरी दृष्टि में कोई एंजिल के लायक लड़का हो तो बताना। तुमसे अच्छा वर मेरी दृष्टि में उसके लिये और कौन हो सकता है। तुम्हारी शादी यदि मीता से नहीं हुई होती तो मैं एंजिल से ही तुम्हारा विवाह करवाता।’

तब बिन्यामीन ने अपने हथियार डाल दिये। बोला,

‘ठीक है या र। जैसी तेरी मर्जी। मीता मेरी मर्जी से आई थी और बगैर बताये चली भी गई। अब जो तेरी इच्छा से आयेगी तो हो सकता है कि य रहा बचा जीवन किसी के संग-साथ रहकर शान्ति से गुज़र जाये ।’

फिर जब अगले सप्ताह नवरोश गुडगांव अपने घर पहुंचा तो मां को देखकर उससे लिपट गया । कारण था कि इस बार एक तो वह काफी दिनों के पश्चात घर गया था। दूसरा मां के इतना बीमार रहने के उपरान्त भी वह उन्हें देखने नहीं जा सका था। उन्हें देखने न जाने के कई कारण एक साथ सामने आ गये थे। कालेज में छात्रों का कोर्स समय से पूरा करना, बिन्यामीन की पत्नी मीता की मृत्यु तथा खुद बिन्यामीन को ऐसे दुख के समय में सहारे की आवश्यकता इत्यादि, ऐसे तमाम कारणों की बजह से ही वह इस बार देर से घर पहुंचा था। घर पहुंचकर उसने पाया कि यूँ तो सब ही कुछ ठीक-ठाक सा था। उसके महल्ले चर्च कम्पाऊंड में भी सब ही बूढ़े, बच्चे और जवान पहले जैसे ही दिखते थे। हां, इतने दिनों के पश्चात घर आने पर उसे लगता था कि जैसे कम्पाऊंड के सारे लोग ही उसको अजनबियों समान देखने लगे थे। उसकी मां भी पहले से काफी कमज़ोर दिखाई दे रहीं थीं। उन्हें देखते ही लगता था कि वह भी अपनी उम्र के उस मोड़ पर आकर ठहर चुकी थीं कि जहां से कोई भी मार्ग अब जैसे किसी भी मंजिल के लिये आगे नहीं जाता था। यात्रा की समाप्ति और मंजिल की प्राप्ति, दोनों ही का समावेश उनके जीवन में स्पष्ट दिखाई देने लगा था।

फिर सबसे मिलने और खाना आदि खाने के पश्चात नवरोश ने कपड़े पहने और बाहर जाने को तैयार हुआ ही था कि पहले ही से उसकी हरेक गति विधियों पर पैनी दृष्टि लगाई उसकी मां सामने आई तो वह उनसे बोला कि,

‘मामा, मैं एंजिल के घर तक जा रहा हूं।’

‘तू जब भी चार दिनों के लिये आयेगा तो वहां जाये बगैर नहीं रह सकता है। क्या करेगा वहां जाकर?’ मां ने कहा तो नवरोश उनसे बोला कि,

‘अरे मामा, वे लोग भी मेरे लिये आप जैसे ही हैं। आप और उन लोगों के बीच में ही रहकर मैं पला बढ़ा हूं। यहां जब आया हूं तो उन सबसे नहीं मिलूंगा तो कैसा सोचेंगे सब? फिर मैंने एंजिल की शादी के लिये अपने मित्र को पसन्द किया है, वह बात भी उसके मां बाप से करनी है।’

‘अपने लिये तो लड़की देखी नहीं जाती है तुझसे? गैरों के लिये खूब समय रहता है तेरे पास?’ उसकी मां ने शिकायत सी की तो वह बोला कि,

‘मामा। कैसी बात करती हैं आप? एक ही महल्ले के रहने वाले लोग आपस में गैर नहीं हुआ करते हैं। फिर ऐंजिल के पापा ने ही कभी मुझसे कहा था कि यदि मेरी दृष्टि में एंजिल के लिये कोई लड़का दिखे तो बताना। अब जब मिल गया है तो उन्हें बताने में बुराई ही क्या है?’

‘हां बताने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन अब बात करने से भी कोई फायदा नहीं है। बहुत देर हो चुकी है।’

‘?’

मां की इस अप्रत्याशित? संशय से भरी बात को सुनकर नवरोश के कदम आगे बढ़ने से पहले ही थम गये। वह उनको आश्चर्य से देखते हुये बोला कि,

‘फायदा नहीं है! मतलब?’

‘मतलब यह है कि **'एंजिल तो भाग गई।'** वह एक हिन्दू लड़के के घर जाकर बैठ गई है। उसने कोर्ट में जाकर अपना विवाह कर लिया है। अच्छा हुआ कि तू उसके चक्कर में पड़ने से बच गया। मुझे तो पहले ही से उस लड़की के लक्षण अच्छे नहीं दिखाई देते थे। सारी ईसाई बस्ती की उस लड़की ने नाक कटवा कर रख दी है’

कहते हुये नवरोश की मां के मुख का स्वाद खराब दिखने लगा तो नवरोश ने फिर आगे उनसे कुछ और कहना ठीक नहीं समझा । वह चुप हो गया । एंजिल के घर भी जाने का इरादा उसने फिलहाल बदल दिया और पैरों में से जूते उतारकर वहीं बरामदे में पड़े पलंग पर जाकर वैसा ही पसर गया । पलंग पर पहले ही से पड़ी नई सरिता की प्रति को खोलते हुये उसने अपनी मां से कहा कि,

‘अब कहीं नहीं जा रहा हूं मामा, लेकिन एक प्याला चाय तो दे सकती हीं आप?’

नवरोश जानता था कि चाय का प्याला तो मांगना मात्र एक बहाना था। सच तो ये था कि एंजिल के बारे में ऐसी अनहोनी सी बात सुनकर उसका घर आने का सारा उत्साह ही समाप्त हो चुका था। साथ ही अपने मित्र बिन्यामीन के बारे में सोचे हुये उसके समस्त सपनों के महल भी पल भर में ही खंडर बनते देर भी नहीं लगी थी। उसके मन में बनाये हुये वे ख्वाब कि जिनके इरादों की हरेक तस्वीर में उसने कितनी हसरतों के साथ अपने मित्र बिन्यामीन के उजड़े और बरबाद घर की नई नींवे रखी थी, कौन जानता था कि यहां आने से पूर्व ही वे न जाने कब की काल के गर्त में समा चुकी हैं। एंजिल ने जो कुछ अपने बारे में किया था, वह नहीं समझ सका था कि

वह उसके परिवार की कोई परम्परा थी या फिर आदत? अथवा उसकी कोई भी विवशता रही होगी? एंजिल को तो वह बचपन से ही जानता था। इंटर की कक्षा तक वह उसके साथ पहली कक्षा से साथ साथ एक ही स्कूल और कालेज में पढ़ता आया था। उसको जितनी अच्छी तरह से वह जानता और समझता था, कम्पाऊंड का शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा कि जो उस लड़की के व्यवहार को जान सका हो? अतीत के जिये हुये दिनों ने अचानक ही करवट ली तो यादों के झुरमुट में नवरोश की आंखों के पर्दों पर वे दिन और वे पल एक.एक करके आने लगे कि जिनकी हरेक तस्वीर में उसके प्रति उसके कुछ अफसाने थे, लोगों के ताने थे और समाज की परम्पराओं के तहत बनाये हुये उसकी बदनामी के वे किस्से थे कि जिनके तहत उसे और एंजिल को लोग तब सन्देह की दृष्टि से देखने लगे थे।

मीता और एंजिल, शायद दोनों ही का सुख बिन्यामीन की तकदीर में नहीं था। दोनों ही को उसने खो दिया था। एक आकर चली गई थी तो दूसरी आने से पहले ही। यही जीवन की वास्तविकता है। एक सच है कि इंसान जिसको अपने जीवन का सिंदूर बनाकर अपनी मांग में रखना चाहता है उसको किसी अन्य के दामन में डाल दिया जाता है।

समाप्त.